आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 07-01-15

हमारी आत्मा को अमूल्य ज्ञान रत्नों से श्रृंगार कर हमें पदमा-पदम भाग्यशाली और योग से पुण्य आत्मा बनाने वाले, बेहद के ज्ञान-सागर, पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - पुण्य आत्मा बनना है तो बड़ी सच्चाई-सफ़ाई से अपना पोतामेल देखो कि कोई पाप तो नहीं होता है, सच का खाता जमा है?

हमारे यह अमूल्य ब्राह्मण जीवन में निर्विघ्न चल कर कर सदा चड़ती कला का अनुभव करना है तो सदा अन्तर्मुखी रहकर स्वचिंतन से स्वपरिवर्तन का सच्चा चार्ट जरूर लिखना हैं. सारे दिन में हमारे मन-वचन-कर्म द्वारा जो भी गलतियां होती है उसका दिन के अन्त में सच्चा चार्ट लिखने से हमें अपनी गलतियों का एहसास होगा और सारे दिन में हमारे से हुई गलतियों को बाप को बता देने से बाबा हमारी आत्मा में शक्ति भरता है जिसे की हम फिर से वही गलतियां न करें. इसे हमारे में पौजीटिव परिवर्तन जरूर होगा जो हम स्वयं भी देख सकेंगे और हमारे सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले भी देख सकेंगे. इसलिए हर ब्राह्मण को अपना सारे दिन का सच्चा चार्ट लिखकर बाप को जरूर देना है.

बाबा ने आज सारी मुरली में दो बातें बताई - १. हर रोज अपना सच्चा चार्ट लिखना. २. ज्ञान रत्नों को स्वयं में धारण कर दूसरों को दान देना.

आज की मुरली से सच्चे चार्ट के बारे में कहे गये बाबा के महा-वाक्यों ---

- बेहद का बाप अपने बच्चों को कहते हैं बच्चे, अपने भीतर जरा जाँच करो. रोजाना अपना पोतामेल देखो कि हमने कितने पाप किये और कितने पुण्य किये? किसको रंज (नाराज) तो नहीं किया?

- बाप बच्चों से यही पुछते हैं - कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं? अभी तुम बच्चों को पुण्य आत्मा बनना है. कोई भी पाप नहीं करना है. तुम्हारी कभी भी किसी पर भी विकार की दृष्टि नहीं जानी चाहिए.

- बाप कहते हैं अपने दिल से पुछो - कितने तक हम पुण्य आत्मा बने हैं? कोई पाप तो नहीं करते हैं? कहाँ तक योग में रहते हैं?

- बाप समझाते है अपने अन्दर में देखो हमने कितने पाप किये हैं? अभी कोई पाप तो नहीं होता है? जरा भी कुदृष्टि न हो. बाप जो श्रीमत् देते है उस पर पूरा चलते है? अगर ऊंच पद पाना है तो बहुत खबरदार रहना हैं.

- बाबा कहते है तुम रोज अपना पोतामेल बैठ निकालना चाहिए कि आज सारे दिन में हमारी अवस्था कैसी रही? फिर बाबा के पास भेज देना चाहिए तो उन्नति अच्छी होगी और डर भी रहेगा.

<u>आज की मुरली में अमूल्य ज्ञान रत्नों के बारे में कहे गये बाबा के महा-वाक्य</u> ---

- बाबा ने कहा, तुम ब्राह्मण बच्चे जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा में प्रवेश होकर हम को अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना देते हैं. ज्ञान सागर बाप के पास ही ज्ञान रत्नों हैं. यह एक-एक रत्न लाखों रुपयों का है. रत्नागर बाप से ज्ञान रत्न धारण कर और फिर इन रत्नों का दान भी करना है. जितना जो लेवे और देवे, उतना उंच पद पाये.

- बाबा कहते है तुम्हें सबको बताना है कि शिवबाबा हमको इस दादा द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं. ज्ञान सागर पतित-पावन शिव को ही कहा जाता है. ज्ञान से ही सद्गति होती है. सबका सद्गति दाता एक ही बाप है. यह है अविनाशी ज्ञान रत्न.

- बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे सब विकर्म विनाश हो जायेंगे. पावन बन और पावन दुनिया में चले जायेंगे. यह पतित-पावन बाप है ना. अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो पावन बनने का. जब विनाश का समय होगा तो फिर तुम्हारी पढ़ाई पूरी हो जायेगी.

- बाबा कहते है तुम यह पर्चा सभी को दे सकते हो जिसमें लिखा हो कि भारत में बाप आकर के फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं और सभी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई द्वारा कल्प पहले मिसल ड्रामा प्लैन अनुसार खलास हो जायेंगे.

- बाबा कहते है मनुष्य तीर्थों आदि पर जाते हैं कितने धक्के खाते हैं. इसको कहा जाता है धर्म के धक्के, वास्तव में है अधर्म के धक्के. धर्म (सतयुग में एक दैवी-देवता धर्म ही होता है, जो ही असूल में हमारा धर्म है) तो धक्के खाने कि दरकार ही नहीं हैं.

ॐ शांति.